शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल
E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2021

छत्तीसगढ़ी और हलबी में प्रयुक्त रिश्ते-नाते की शब्दावली का तुलनात्मक अध्ययन

हितेश कुमार (शोधार्थी)
भाषा विज्ञान
साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला
शंकर लाल कुँजाम
कुलपति के निज सहायक
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध संक्षेप

मानव ही एकमात्र प्राणी है, जो पूर्णतः विकसित है। फलस्वरुप वह समूह और परिवार में जीवनयापन करता है। परिवार के बनिस्बत ही वह समाज का निर्माण करता है। साथ-ही-साथ वह आपस में रिश्ते-नातों का भी निर्माण करता है। सामाजिक रिश्ते-नातों के प्रति जो समाज जितना ही जागरूक होता है, उस समाज में रिश्ते-नाते की शब्दावली उतनी ही स्पष्ट और व्यापक होती है। रिश्ते-नाते की शब्दावली हमारे समाज और हमारी संस्कृति को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम होती है। प्रत्येक भाषा में रिश्ते-नाते की शब्दावली का एक महत्वपूर्ण स्थान है। छत्तीसगढ़ी और हलबी भाषा में भी इसकी उतनी ही सार्थकता है, जितनी अन्य भाषाओं में है। प्रस्तुत शोधपत्र में दोनों भाषाओं के रिश्ते-नाते की शब्दावली को व्याकरिणक एवं अर्थ के आधार पर उदाहरण सहित तालिका रूप में शब्द, वाक्य को संयोजित कर साम्य एवं वैषम्य को प्रस्तुत किया गया है। शोधपत्र के माध्यम से छत्तीसगढ़ की प्रमुख भाषा छत्तीसगढ़ी एवं 'लिंग्वाफ्रेंका हलबी को जनमानस तक पहुँचाना है तथा इन भाषाओं को विश्वपटल पर लाकर इनकी उपयोगिता को सिद्ध करना ही आधार है।

मुख्य शब्द: *छत्तीसगढ़ी, हलबी, तुलनात्मक, व्याकरणिक, अर्थ, शब्दावली।*

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी समाज में जन्म लेता है। वह समाज के विभिन्न रिश्ते-नातों से बँधा हुआ होता है। जिनके कुछ रिश्ते जन्म से होते है, जिन्हें 'खून का रिश्ता' कहा जाता है एवं कुछ रिश्ते मनुष्य द्वारा बनाए गए होते है। हर समाज का भाषा और संस्कृति अपने में विशिष्ट होती है। भाषा संस्कृति की वाहिका होती है। प्रत्येक भाषाओं में समस्त रिश्ते-नाते की शब्दावली की प्रक्रिया लिंग, आयु, पीढ़ी, रक्त-संबंध और विवाह-संबंध का उपयोग करते हुए ही किया जाता है। प्रत्येक भाषा-समाज में पारिवारिक संरचना के आधार भिन्न होते है। इसी कारण हरेक भाषा-समाज रिश्ते-नाते के शब्दों का गठन अपने विशिष्टता के अनुरूप करता है। रिश्ते-नातों की शब्दावली भाषा और समाज को वर्गीकृत करने की मूलभूत व्यवस्था है, जो पारिवारिक-संरचना के साथ-साथ सामाजिक-संरचना का परिचय कराती है। किसी

समाज में पाए जाने वाले मनुष्य के आपसी रिश्तों तथा संबंधों के बारे में विभिन्न मानव-शास्त्रियों ने विभिन्न रीति से विचार किया है। किसी ने केवल वैवाहिक संबंध को आधार मानकर रिश्ते को परिभाषित किया है तो किसी ने रिश्तों के साथ सामाजिक नियमों एवं कर्तव्यों को भी महत्वपूर्ण बताया है।”[1]

रिश्ते-नाते की शब्दावली को जब हम सामाजिक संदर्भ में देखते हैं, तो यह स्पष्ट परिलक्षित होने लगता है कि यह भाषा की संरचना पर भी अपना प्रभाव डालती है। यह भी स्पष्ट है कि भारतीय समाज के संस्कारों में भिन्न-भिन्न रिश्ते-नातों की भिन्न भूमिका होती है। ये भूमिका स्पष्ट करती है कि रिश्ते-नाते हमारे जीवन और लोक की जड़ों तक कितने फैले हुए हैं। प्रत्येक भाषा में रिश्तेनाते की शब्दावली का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

छत्तीसगढ़ी और हलबी दोनों भारोपीय भाषा परिवार की बोलियाँ हैं एवं दोनों की लिपि देवनागरी है। छत्तीसगढ़ी, छत्तीसगढ़ राज्य में पूर्वी हिंदी भाषा परिवार की एक सशक्त सदस्य बनकर उभरी है। वर्तमान में छत्तीसगढ़ी को छत्तीसगढ़ में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हलबी बस्तर में एक संपर्क-भाषा बनी हुई है जो अपने ऐतिहासिक विकास-क्रम में छत्तीसगढ़ के बस्तर अंचल में लोकभाषाओं के अनोखे पुनर्मिलन को रेखांकित करती है। बस्तर संभाग की लोकभाषा ‘हलबी’ हलबा जनजाति की मातृभाषा थी, परंतु वर्तमान में हलबी न सिर्फ हलबा जाति की मातृभाषा है, बल्कि उस क्षेत्र की धाकड़, कुम्हार, राउत, केंवट, मुरिया, घसिया, सुनार, पनारा, कलार, माहरा आदि, जाति के लोगों की भी मातृभाषा है। छत्तीसगढ़ी और हलबी के रिश्ते-नाते की शब्दावली का तुलनात्मक अध्ययन हेतु सतीश जैन[2] की ‘छत्तीसगढ़ी में व्यवहृत रिश्ते-नातों से संबंधित शब्दावली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन’ को आधार बनाकर प्रस्तुत किया गया है।

लिंग-विधान

छत्तीसगढ़ी और हलबी में स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग दो ही भेद हैं। “मध्यवर्ती आर्यभाषा-परिवार की हिंदी-बोलियों में ये दो ही लिंग रह गए हैं।”[3]

छत्तीसगढ़ी एवं हलबी में “व्याकरण की दृष्टि से लिंग-निर्णय के नियम बड़े ही शिथिल हैं, क्योंकि क्रिया के रूप और संबंध कारक के चिह्न दोनों लिंगों में समान रहते हैं।”[4]

यथा -

छत्तीसगढ़ी	**हलबी**	**हिंदी**
ददा आइस	बाबा इलो	पिता आ गया
दाई आइस	आया इली	माँ आ गई
ये हर कका के बाबू हरय	ए काका चो बेटा आय	यह चाचा का लड़का है
ये हर कका के नोनी हरय	ए काका चो बेटी आय	यह चाचा की लड़की है

छत्तीसगढ़ी और हलबी की रिश्ते-नाते की शब्दावली के शब्दों के लिंग-निर्धारण हेतु कोशगत अर्थ को आधार माना गया है। स्त्री वर्ग से संबंधित शब्दों को स्त्रीलिंग तथा पुरूषवर्ग से संबंधित शब्दों को पुल्लिंग स्वीकार किया गया है। छत्तीसगढ़ी में लिंग व्याकरणिक रूप से प्रभावशील नहीं है अर्थात् संज्ञा के लिंग का प्रभाव वाक्य के क्रियापद पर नहीं पड़ता, जैसे -

छत्तीसगढ़ी ददा आइस, दाई आइस

लिंग छत्तीसगढ़ी में व्याकरणिक नहीं है, जबकि हलबी में पूर्ण वर्तमानकाल एवं भूतकाल में लिंग का प्रभाव क्रिया पर देखा जा सकता है, जैसे - **हलबी** बाबा इलो, आया इली

छत्तीसगढ़ी और हलबी की रिश्ते-नातों की शब्दावली में लिंग-भेद तीन प्रकार के प्राप्त होते हैं - कुछ शब्द केवल पुल्लिंग में प्रयुक्त होते है, कुछ शब्द स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं एवं कुछ शब्द दोनों लिंगों में समान रूपों में प्रयुक्त किए जा सकते हैं।

स्त्रीलिंग

छत्तीसगढ़ी	हलबी	हिंदी
दाई	आया	माँ
डउकी	बायले	पत्नी
डेढ़सास	डेड़ सास	पत्नी की बड़ी बहन
डोकरी दाई	आयी	दादी
दिदी	दिदी	दीदी
बड़े दाई	बड़े आया	बड़ी माँ
काकी	काकी	चची
मोसी	नानी आया/नाना	मौसी
ढेरहिन	सोआसिन	सुवासिन
बेटी	बेटी	लड़की/पुत्री
समधिन	समदिन	समधीन
ममादाई	दिदी	ननी
मितानिन	मीत	मित्र
सउत	सउत	सौतन

पुल्लिंग

छत्तीसगढ़ी	हलबी	हिंदी
ददा	बाबा	पिता
डउका	मुनिस	पति
डेढ़साला	सुसरा	पत्नी की बड़ा भाई
बबा	छादा	दादा
भइया	दादा	बड़े भाई
बड़े ददा	बड़े बाबा	ताऊ
कका	काका	चचा
मोसा	नानी बाबा	मौसा/मौसिया
ढेड़हा		सुवासा
मितान	मीत	मित्र

स्त्रीलिंग / पुल्लिंग

छत्तीसगढ़ी	हलबी	हिंदी
मनखे	मनुक	मनुष्य
संगवारी	संगवारी / संगवारिन	मित्र
हमजोली	जँवरेया	हमउम्र
गड़ी	जोड़ी	जोड़ी
सगा/पहुँना	सगा	रिश्तेदार
सुआरी	रंधवारी/रंधवारिन	रसोइया

रिश्ते-नाते के शब्दों में लिंग निर्धारण संबंधी नियम इस प्रकार हैं

(अ) कुछ शब्द ऐसे होते है, जो स्त्री के पति या भाई आदि नर रूप के आधार पर पुल्लिंग होते हैं, यथा-

छत्तीसगढ़ी	**हलबी**	**हिंदी**
डेढ़सारा	सुसरा	पत्नी का बड़ा भाई
साढ़ू	साड़ू	साली का पति
भाँटो	भाटो	बड़ी बहन का पति

(आ) आकारांत शब्द प्रायः पुल्लिंग होते हैं, यथा -

छत्तीसगढ़ी	**हलबी**	**हिंदी**
ददा	बाबा	पिता
डउका	मुनिस	पति
बबा	छादा	दादा
ममा	मामा	मामा
सारा	सारा	साला
टुरा	लेका	लड़का
फुफा	मामा	फुफा

(इ) इकारांत शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं, यथा -

छत्तीसगढ़ी	**हलबी**	**हिंदी**
दाई	आया	माँ
डउकी	बायले	पत्नी
मामी	बुबु	मामी
भउजी	बोउ	भाभी
सारी	सारी	साली
टुरी	लेकी	लड़की

वचन

छत्तीसगढ़ी और हलबी संज्ञा शब्दों में एकवचन तथा बहुवचन रूप पाए जाते है। वचन वह व्याकरणिक काटि है जो संख्या नाम की गणनीयता संख्येयता से संबद्ध है। “जितने भी विकारी प्रतिपादक है, उसमें विकारों के कारणों में लिंग के बाद दूसरा स्थान वचन का ही है। वचन का अर्थ ‘संख्या’ है। सामान्यतः जिस रूप में संख्या का बोध हो उसे वचन कहते है अर्थात शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि यह एक है या एक-से अधिक।”[5] बहुवचन ‘मन’ की उत्पत्ति के विषय मे भालचंद्र राव तैलंग[6] ने लिखा है - “मन की उत्पत्ति डॉ. चटर्जी ने इस प्रकार बताई है मन < मान < मानव।” ‘मन’ की एक और विशिष्टिता का उल्लेख कांतिकुमार[7] ने इस प्रकार किया है - “निर्जीव वस्तुओं तथा प्रश्नवाचक वाक्यों में ‘मन’ का प्रयोग नहीं किया जाता।”

एक से बहुवचन बनाने के लिए सामान्यतः विकार नहीं होता, तथा शब्दांत में स्वतंत्र शब्द जोड़ दिया जाता है अथवा संज्ञा के अंतिम स्वर को ह्रस्व करके उसमें बहुवचनवाची प्रत्यय जोड़ दिया जाता है।

स्वतंत्र शब्द	**छत्तीसगढ़ी**		**हलबी**	
	एकवचन	**बहु वचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
‘मन’	डउकी	डउकी मन	बायले	बायले मन
	बहिनी	बहिनी मन	बहिन	बहिन मन
	संगवारी	संगवारी मन	संगवारी	संगवारी मन
	बनिहार	बनिहार मन	भुतयार	भुतयार मन

स्वतंत्र शब्द पहले जोड़कर - छत्तीसगढ़ी में संज्ञा के पहले शब्द - सब्बो, जम्मो, गंज अकन, अब्बड़ झन, आदि जोड़कर भी बहुवचन रूप बनाए जाते है। हलबी में जमाय, अबायक आदि जोड़े जाते हैं।

स्वतंत्र शब्द	**छत्तीसगढ़ी**		**हलबी**	
	एकवचन	**बहु वचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
‘सब्बो’ (सभी)	सगा (अतिथि)	सब्बो सगा	सगा	जमाय सगा
जम्मो (सभी)	जहुरिया (समव्यस्क)	जम्मो जहुरिया	जँवरेया	जमाय जँवरेया
गंज अकन (बहुत ज्यादा)	बरतिया (बारात में सम्मिलित लोग)	गंज अकन बरतिया	बराती	अबायक बराती
अब्बड़ झन (बहुत ज्यादा)	गोतियार (समान गोत्र वाले)	अब्बड़ झन गोतियार	गोतया	अबायक गोतया

विकारी-रूप

छत्तीसगढ़ी के संज्ञा-शब्दों के कारकों में विकृत रूप नहीं बनाए जाते।[7] ठीक ऐसे ही हलबी में भी देखा जाता है। तद्नुसार रिश्ते-नाते के शब्दावली भी कारक-चिह्न के पूर्व में प्रयुक्त होते है। जैसे -

छत्तीसगढ़ी - कका हर (कर्ता), लडका ला (कर्म, संप्रदान), काकी ले (करण), कनिया/कनिहा म (अधिकरण), ए दाई (संबोधन)।

हलबी - काका (कर्ता), लेका के (कर्म, संप्रदान), काकी ले (करण), करांड ने (अधिकरण), ए आया (संबोधन)।

संबोधन-रूप : यथा - ए बाबू, ए बाबू मन

मानक हिंदी में अर्थ	**छत्तीसगढ़ी**		**हलबी**	
	संदर्भ शब्द	**संबोधन शब्द**	**संदर्भ शब्द**	**संबोधन शब्द**
दादा	बबा	अजा बबा, डोकरा बबा, परदादा, बड़े बबा।	दादा	बड़े दादा (दादा के बड़े भाई), नानी दादा (दादा के छोटे भाई)
दादी	दाई	आजी दाई, बुढ़ी दाई, डोकरी दाई, फूल दाई	आयी	बड़े आयी, (दादी की बड़ी सौत या जेठानी), नानी आयी (दादी की छोटी सौत या देवरानी), मीत आयी (पिता के विशेष मित्र की माँ)
पिता	ददा	बाप, बाबू, फूल ददा (मित्र के पिता के लिए)	बाबा	बड़े बाबा (ताऊ), नानी बाबा (मौसा) मीत बाबा (पिता के विशेष मित्र/सखा या स्वयं के विशेष मित्र या सखी के पिता)
माता	दाई	महतारी, माई, दई, दुदु दाई अम्माँ	आया	बड़े आया (ताई या माता की बड़ी सौत), नानी आया (मौसी या माता की छोटी सौत/सौतेली माँ) मीत आया (माता की सखी या स्वयं के विशेष मित्र या सखी की माँ)
ताऊ	बड़े ददा	बड़का ददा, बड़का बाप	बड़े बाबा	बड़े बाबा
चाचा	कका	कका, काका, कका बाप	काका	काका
चाची	काकी	काकी, कका दाई	काकी	ककी
नानी	ममा दाई	आजी दाई, नानी, नानी दाई	दिदी	दीदी

द्विशब्दीय रचनाओं का विश्लेषण

“दो से अधिक शब्दों का परस्पर संबंध बताने वाला शब्द अथवा प्रत्यय के लोप होने पर उन दो या दो से अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते है और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है वह समास कहलाता है।”[8]

छत्तीसगढ़ी में प्रयुक्त रिश्ते-नाते की शब्दावली में प्रयुक्त 'माईपिल्ला' (सभी परिवार), 'लड़का-पिचका' (बाल-बच्चे), 'डउकीपरानी' (स्त्री जाति) आदि को सामासिक शब्द मानकर विवेचित किया गया। छत्तीसगढ़ी एवं हलबी के धातुओं का सामासिक प्रक्रिया के अंतर्गत विभिन्न समासों के अनुसार दो धातुओं के योग से नए शब्द का सामासिक रूप-परिवर्तन (अर्थ के साथ) निम्नानुसार है-

छत्तीसगढ़ी		**हलबी**	
संज्ञा+संज्ञा	सामासिक अर्थ	संज्ञा+संज्ञा	सामासिक अर्थ
ममा + दाई	नानी	--	--
ममा + ददा	नाना	--	--
मम्मा + बहिनी	ममेरी बहन	मयना बहिन	ममेरी बहन
ममा + भाई	ममेरा भाई	मयना भाई	ममेरा भाई
कका + बहिन	चचेरी बहन	--	--
कका + भाई	चचेरा भाई	--	--
फूफू + बहिन	फूफेरी बहन	मयना बहिन	फुफेरी बहन
बेटा + नतनिन	पोती	बेटा नातिन	पेती
बेटा + नाती	पोता	बेटा नाती	पेता
बेटी + दमाद	दामाद	बेटा जुआँय	छामाद
मोसी + दाई	सौतेली माँ	--	--

छत्तीसगढ़ी		**हलबी**	
विशेषण + संज्ञा	सामासिक अर्थ	विशेषण + संज्ञा	सामासिक अर्थ
कुरा + ससुर	जेठ	--	--
कुरा + सास	जेठानी	--	--
डेढ़ + सारा	बड़ा साला	--	--
डेढ़ + सारी	बड़ी साली	डेड़ सास	बड़ी साली

कुछ रचना ऐसी है, जिनके लिए शब्द नहीं है, उनसे व्यक्त रिश्ते को स्पष्ट करने हेतु वाक्यांश ही प्रयुक्त में लाना होता है, यथा -

छत्तीसगढ़ी - बड़े दाई के बेटी (बड़ी मौसी की बेटी)
बड़े दाई के बेटा (बड़ी मौसी का बेटा)
हलबी- बड़े आया चो बेटी (बड़ी मौसी की बेटी)
बड़े आया चो बेटा (बड़ी मौसी का बेटा)

विशिष्ट शब्दों के अभाव एवं अस्तित्व

विशिष्ट शब्दों के अभाव एवं अस्तित्व के विश्लेषण हेतु छत्तीसगढ़ी और हलबी की रिश्ते-नाते के शब्दावली की तुलना मानक हिंदी की ऐसी शब्दावली से की गई है।

अभाव से तात्पर्य है ऐसे रिश्ते जो दोनों में है, पर मानक हिंदी में उनके लिए अलग शब्द है, जबकि छत्तीसगढ़ी और हलबी में उनके लिए अलग-अलग शब्द न होकर केवल एक ही शब्द विद्यमान है। यथा

रिश्ता	**मानक हिंदी**	**छत्तीसगढ़ी**	**हलबी**
पिता का बड़ा भाई	ताऊ	बड़े ददा	बड़े बाबा
माँ की बड़ी बहन का पति	बड़ा मौसा	बड़े ददा	बड़े बाबा
पिता के बड़े भाई की पत्नी	ताई	बड़े दाई	बड़े आया
माँ की बड़ी बहन	बड़ी मौसी	बड़े दाई	बड़े आया
पति की बड़ी बहन	बड़ी ननद	डेढ़सास	डेड़ सास
पत्नी की बड़ी बहन	बड़ी साली	डेढ़सास	डेड़ सास
पति के पिता का पिता	ददिया ससुर	बुढ़ा ससुर	दादा सतरा
पत्नी के पिता का पिता	ननिया ससुर	बुढ़ा ससुर	दादा सतरा
पति के पिता की माँ	ददिया सास	बुढ़ी सास	आयी सतरी
पत्नी की माँ की माँ	ननिया सास	बुढ़ी सास	दिदी सतरी

अस्तित्व से तात्पर्य है - ऐसे रिश्ते जो दोनों में है, पर इनके लिए केवल छत्तीसगढ़ी और हलबी में शब्द मिलता है, जबकि मानक हिंदी में उनके अर्थ स्पष्ट हेतु पुरा-पुरा वाक्यांश का सहारा लेना होता है। यथा

वाक्याँश	**छत्तीसगढ़ी**	**हलबी**
भगाकर लाई गई स्त्री	उढ़रिया	उधलेया
तीन पुत्र के बाद पैदा हुई पुत्री	तितरी	--
तीन पुत्री के बाद पैदा हुई पुत्र	तितरा	--
मित्र का पिता	फूल ददा	मीत बाबा
मित्र की माँ	फूल दाई	मीत आया
विवाह के पूर्व ससुराल में रहने वाला दामाद	लमसेना	घर जियाँ
वर-वधु की जीजा या फूफा	सुवासा	--
वर-वधु की दीदी या बुआ	सुवासिन	--

आदर-भाव एवं तिरस्कार-भाव

आदर-भाव

हिंदी भाषी समाज में आदर-भाव के लिए विभिन्न संबोधन के प्रयोग में संबंधित व्यक्ति की आयु, पद, परिचय की विशिष्ट स्तर का तत्व के रूप में समाहित होते हैं, जैसे-साहब, महोदय, आदरणीय,

सम्माननीय, मान्यवर, श्रीमान्, श्रीमती आदि प्रयुक्त होते हैं। छत्तीसगढ़ी और हलबी में आदर-भाव स्पष्ट करने के लिए रिश्ते-नाते के शब्दावली की अवस्था को महत्व देकर लिया जाता है।

मानक हिंदी	आदर-सूचक शब्द	छत्तीसगढ़ी	हलबी
ताऊ	बड़े (बड़ा)	बड़े ददा	बड़े बाबा
परदादा	बूढ़ा (वृद्ध	बुढ़ा ददा	--
परनाना/ददिया ससुर	बूढ़ा (वृद्ध)	बुढ़ा ससुर	--
जेठ	कुरा (बड़ा)	कुरा-ससुर	ससुरा
जेठानी	कुरा (बड़ा)	कुरा-सास	जेठानी
बड़ा साला	डेढ़ (बड़ा)	डेढ़सारा	ससुरा
बड़ी साली	डेढ़ (बड़ा)	डेढ़सास	डेड़ सास

'दाई' तथा 'दीदी' का भी प्रयोग छत्तीसगढ़ी में माँ-जैसी तथा बड़ी बहन-जैसी अन्य महिला के प्रति आदर-भाव को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। ऐसे ही 'बाई' शब्द का प्रयोग ग्रामीण परिवेश में पति अपने पत्नी के लिए करते हैं तथा गाँव में मालगुजार के पत्नी के लिए भी 'बाई' शब्द का संबोधन प्रचलित है। छत्तीसगढ़ अंचल में ही शहरी परिवेश में 'बाई' शब्द का प्रयोग घरेलू काम करने वाली नौकरानी के लिए प्रयुक्त होता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ़ी और हलबी की रिश्ते-नाते शब्दावली का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। प्रायः समान अर्थ या आशय वाली शब्दावली का संकलन किया गया है। भारतीय भाषा परिवार की सदस्य एवं पड़ोसी होने के फलस्वरूप छत्तीसगढ़ी एवं हलबी अपनी मूलभूत शब्दावली में अनेकानेक शब्द साझा करती है। व्याकरणिक प्रयोगों में भी बहुत कुछ साम्य है परंतु भौगोलिक, जातीय, एवं सांस्कृतिक भिन्नता पड़ोसी भाषाओं से संबंधों के प्रभावों के कारण दोनों भाषाओं में वैषम्य भी है तथापि पड़ोसी भाषा होने के कारण शब्दों के रूपों की भिन्नता अर्थ ग्रहण में बहुत बड़ी बाधा नहीं बनती।

संदर्भ ग्रंथ

1 वैश्ना नारंग, संपा. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, (2008), हिंदी का सामाजिक संदर्भ, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, पृष्ठ 164.

2 सतीश जैन, (1982), छत्तीसगढ़ी में व्यवहृत रिश्ते-नातों से संबंधित शब्दावली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (शोध-प्रबंध), पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

3 धीरेंद्र वर्मा, (1953), हिंदी भाषा का इतिहास, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, पृष्ठ 118

4 भालचंद्र राव तैलंग, (1966), छत्तीसगढ़ी, हलबी, भतरी बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई, पृष्ठ 114.

5 सुधीर शर्मा, संपा. चितरंजन कर, (1993), 'वचन' छत्तीसगढ़ी की व्याकरणिक कोटियाँ, मिश्रा पुस्तक सदन, बिलासपुर, पृष्ठ 12

6 भालचंद्र राव तैलंग, (1966), छत्तीसगढ़ी, हलबी, भतरी बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई, पृष्ठ 117.

7 सतीश जैन, (1982), छत्तीसगढ़ी में व्यवहृत रिश्ते-नातों से संबंधित शब्दावली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (शोध-प्रबंध), पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृष्ठ 57.

8 कामता प्रसाद गुरु, (1927), हिंदी व्याकरण, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, पृष्ठ 269